II निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

१. रैदास ने भगवान और भक्त के संबंध को कैसे वर्णित किया है ?

उत्तर : संत रैदासजी भगवान और भक्त के संबंध को कुछ इस तरह बताते हैं–मुझे राम–नाम जपने की आदत सी हो गई है । अब चाहकर भी वह मुझसे अलग न हो पाएगी । क्यों कि इतने दिनों तक उनकी भक्ति करते–करते भगवान और इस भक्त का ऐसा संबंध बना है, जो एक दूसरे से भिन्न नहीं होगा । राम को पूरे समर्पण भाव से स्वीकारते हुए रैदासजी ने स्वयं को पानी, बाती, धागा और दास संबोधित किया है तो प्रभु को चंदन, दीपक, मोती और स्वामी के रूप में स्वीकार लिया है । इस तरह भगवान और भक्त के संबंध को वर्णित किया है ।

२. परिश्रम के महत्व के प्रति रैदास के क्या विचार हैं ?

उत्तर : परिश्रम के महत्व के प्रति रैदास के विचार यह हैं कि–जो व्यक्ति दिन–रात कठिन परिश्रम करके अपना उदर पोषण करता है वह सभी दुखों से दूर रहता है । क्यों कि जो व्यक्ति कर्म किये बिना फल की अपेक्षा करता है वह हमेशा दुःखी होता है । फल की अपेक्षा किये बिना जो व्यक्ति मेहनत करता है, वह सच्चा सुखी कहलाता है । इस तरह दिन–रात मेहनत कर जो नेक कमाई (प्रामाणिकता से) करता है, वह कमाई कभी व्यर्थ नहीं जाता । उसका फल उसे ज़रूर मिलता है।

३. रैदास ने किस प्रकार के राज्य का वर्णन किया है ?

उत्तर : रैदासजी ने राम–राज्य का वर्णन किया है–वे कहते हैं कि एक राजा का राज्य ऐसा होना–चाहिए जहाँ रहनेवाले सभी प्रजा को अन्न मिले, कोई भूखा न रहे । राजा को पिता के समान प्रजा रूपी संतान की देखभाल करनी चाहिए । ऐसे राज्य में ऊँच–नीच, बड़े–छोटे होने का कोई भेद–भाव नहीं होना चाहिए । सभी को समान दृष्टि से देखकर उचित न्याय देना चाहिए । ऐसे राज्य को देखकर रैदासजी को अत्यधिक प्रसन्नता होती है ।

III ससंदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए :–

१. अब कैसे छूटे राम रट लागी ।

प्रभु जी तुम चंदन हम पानी,

जाकी अंग–अंग बास समानी ।

संदर्भ: यह पद्य भाग रैदासजी द्वारा लिखित 'रैदास बानी' कविता से ली गयी है । इस पद्य भाग में रैदास राम के प्रति अपनी भक्ति भावना का वर्णन करते हैं–

भाव: संत रैदासजी कहते हैं कि प्रभु राम का नामस्मरण, भक्ति भावना अब मुझसे छोड़ा नहीं जाता । जिस तरह से चंदन को पानी के साथ उगाले जाने पर, पानी के कण–कण में समा जाता है । पानी में भी चंदन की सुगंध फैल जाती है । ठीक उसी तरह मेरे हर विचार, मेरी हर एक साँस में, मेरे रक्त के कण–कण में भगवान राम समाए हुए हैं ।

विशेष: भक्त और भगवान के संबंध को स्पष्ट किया गया है ।

Scanned with CamScanner